❑लघुकथा

आज रौ सरवण

डॉ. लीला मोदी

लेखिका परिचै

डॉ. लीला मोदी रौ जलम कोटा में 10 मार्च, 1960 में होयौ। अेम.अे., पीअेच.डी., डी. लिट, बी.अेड., आयुर्वेद रत्न, अेम.लिट. तांई भण्या-गुण्या लीला जी अबार जानकी देवी बजाज कन्या महाविद्यालय, कोटा में अध्यक्ष अर कोटा विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग रा संयोजक है। बाल-साहित्यकार, शोधवेत्ता अर कवयित्री अर कथाकार रै रूप में ख्यातनांव डॉ. लीला मोदी री छप्योड़ी पोथ्यां मांय 'हाड़ौती लोकगीत', 'हाड़ौती लोकगीतां में संस्कृति', 'लाख टकां की बात', 'हाड़ौती की कृषि संबंधी सबदावळी', 'फुलवाड़ी', 'जातरा', 'सुपना', 'राघव' अर 'लहर लहर चंबल' उल्लेखजोग है। हिंदी मांय भी आपरी केई पोथ्यां छप्योड़ी है। आपनैं 'तुलसी पुरस्कार', 'आशु कविता प्रतियोगिता पुरस्कार' अर भारतेंदु साहित्य समिति, कोटा सूं 'अखिल भारतीय कहाणी प्रतियोगिता पुरस्कार', 'सहकार गौरव' अर 'साहित्य रत्न पुरस्कार' समेत केई इनाम-इकराम मिल्योड़ा।

पाठ परिचै

इण पाठ में सामल लघुकथा 'आज रौ सरवण' आज री पीढी माथै अेक करारौ व्यंग्य है, जकी कै आपरै माईतां नैं बोझ समझनै वांरौ आव-आदर नीं करै अर वांरा हाण ढळ्यां पछै वांनै वृद्धाश्रम में छोड आवण सूं ई परहेज नीं करै। अठै कथा रौ नायक रामरतन वृद्धाश्रम री ठौड़ आपरी मां नै टोकरै में ऊंचायनै आपरै गांव में रैवणियै छोटै भाई कनै छोडण नै जाय रैयौ है, पण देखण वाळा लोग-लुगायां समझै कै रामरतन आपरी मां नैं कठैई तीरथ करावण नै लेजाय रैयौ है, का पछै मिंदर में दरसण करावण नै कै परिक्रमा दिरावण नै लेजाय रैयौ है। कथा रै अंत में जद अेक आदमी रामरतन नैं चाय पीवण री मनवार करै तद वौ न्हासतौ-दौड़तौ कैवै कै अबार उण कनै टैम नीं है क्यूंकै वौ आपरी मां नैं कनै ई आपरै गांव में छोटकियै भाई कनै छोडण नै जाय रैयौ है तद कथा रौ असली मरम प्रगट होवै। कळजुग रा सरवण बेटा कैड़ा होवै, औ भेद प्रगट करणौ इज इण छोटी-सी लघुकथा रौ मोटौ मकसद है। डॉ. लीला मोदी कनै लघुकथा रचण रौ अेक आंटौ है, जकौ पाठकां नैं बांध्यां राखै अर अंत में उण लघुकथा री घुळगांठ अैड़ी सौरी खुलै कै पढेसरी अचंभै में पड़ जावै।

आज रौ सरवण

रामरतन की उमर पचास के आस-पास होवैगी। उंका माथां पै अेक बडौ सारौ टोकरौ छौ। उंमें बीचूं-बीच अेक गांठड़ी-सी पड़ी छी। उभाणा पावां उ भाग्यो जा रियौ छौ। उफणतौ तावड़ौ छौ, माथा सूं पसीनौ चू रियौ छौ। उइं फुरती सूं भागतौ देखनै अेक साग बेचबा हाळौ पूछ्यौ, ''अरे रामरतन! कठी भाग्यौ जा रियौ छै। अरे बता तो सही, ईं टोकरा में खीं ले जा रियौ छै?

रामरतन हाथ हिलायनै बोल्यौ, ''टैम कोईनै।''

साग लेबा वाळी लुगाई थी। बोली, ''भला मनख, थे तौ साग तोलौ। उ तौ उंकौ काम कर रियौ छै।'' अेक लुगाई और साग लेबा आगी। वा बोली, ''टोकरा में तो वांकी जामण दीखै। बीमार होगी। चाल फिरबा माफक नीं होवैगी। अस्पताळ लेजा रियौ होवेगौ। थे भी कांई बावळा होग्या।''

साग वाळौ बोल्यौ, ''लोग-बाग तौ झूठयांई खेवै छै कै घोर कळजुग आग्यौ। देखल्यो! असा कळजुग में भी सपूत छै न! धरती यांका धरम सूं ही चाल री छै।''

चौराहा पै अेक हैंडपंप छौ। वां लुगायां पाणी भर री छी। आपणा दुख-सुख अेक दूजी नैं बांट री छी। रामरतन वां थमग्यौ। उंनैं अेक हाथ सूं टोकरो थामल्यौ। दूसरा हाथ सूं पाणी पिलाबा को इशारौ करयौ। अेक पिछाण की बायर नै पाणी प्वायौ। पाणी पी'र फेर भाग्यौ-भाग्यौ आगै बड़्यौ।

बायरां आपस में बातां करबा लागी—

पैली, ''टोकरा में मायड़ दिखै। पाणी भी तौ साता सूं कोनै पीयो।''

दूसरी, ''मंदर के आड़ी जा रियौ छै। दरसण कराबा ले जा रियौ होवैगौ। ''

तीसरी, ''डोकरी धीमां चालती होवैगी। महाप्रभुजी रौ मंदर तो झट ही बंद हो जावै छै। ईं लेखै बचारौ मांई नैं टोकरा में माथै पे धरनै ही ले आयौ।

चौथी, ''हे रे, म्हारा भगवान! कळजुग में सभ्याईं असा ईं बेटा दीज्यौ। अरे म्हारा राम! अेक म्हूं छूं। बुढापा में भी पाणी भरबा आणी पड़ै छै।''

पाचवीं, ''घरां रैवां तौ गाळ्यां खावां। आज भी धरती पै धरम छै। कोख उजळी कर दी। थू धन्न छै रे रामरतन।''

रामरतन रेलवे क्रासिंग के पास पूग गियौ। वां सूं रेल गुजर री छी। धड़-धड़ करनै रेल भागी जा री छी। रामरतन रौ काळजौ रेल री रफ्तार सूं भी तेज धड़क रियौ छौ। उन्हैं रफ्तार थोड़ी दमनी कर दी। पसीना पूछ्यौ। थोड़ौ थमणौ पड़्यौ।

अेक बायर बोली, ''टोकरा में डोकरी ही दीखै छै।''

दूसरी बोली, ''मंदर कै आड़ी जा रियौ छे, अधक मास छै। पचकोसी परकम्मा लगाबा ले जा रियौ दीखै।

तीसरी सोचनै बोली, ''डोकरी सूं परकम्मा भी कांईं दी जाती होवैगी। ल्याई माथां पै ढोकै ई परकम्मा देणी होवैगी।

चौथी बोली, ''बेच्यारो! म्हनैं घणी बार तौ ईं कांधा पे बिठाण के लातो देख्यौ छै। अबकी बार ही टोकरा में माथा पै धरनै ले जा रियौ छै।''

अेक आदमी पूछ्यौ, ''रामरतन, डोकरी मरगी के! मसाणा आड़ी जा रियो छे कै?

रामरतन बोल्यौ, ''मरी तो कोनै। छोकी भली छै।''

आदमी, ''तौ बीमार छै के? भाग्यौ-भाग्यौ कठी ले जा रियौ छै? आजा चाय पी ल्यां।''

रामरतन बोल्यौ, ''अबार टैम कोनी। पाछौ आऊंगौ तौ चाय कांई नास्तौ भी कर लेगां। म्हारी टैम तौ अब पूरी होगी, सो माथै री आफत नैं उतारबा छोटा भाई के घरां पास रा गांव में जा रियौ छूं।''

⌘⌘

माटी री मनस्या / बांझ

भंवरलाल 'भ्रमर'

लेखक परिचै

कथाकार भंवरलाल 'भ्रमर' रौ जलम बीकानेर में 22 अक्टूबर, 1946 में होयौ। आप अेम.अे., अेम.अेड. री डिग्री अर साहित्य-रत्न, साहित्य शिरोमणी री उपाधियां हासल करी। आप राजस्थान रै शिक्षा महकमै में अध्यापन सेवा करी। राजस्थानी में 'तगादो', 'अमूजो कद तांई', 'सातूं सुख' कहाणी-संग्रै छप्योड़ा। 'भोर रा पगलिया' आपरौ बाल उपन्यास है। 'भ्रमर' शिवचन्द्र भरतिया रै उपन्यास 'कनक सुंदर' अर राजस्थानी री प्रतिनिधि कहाणियां रै संग्रै रौ 'पगडांडी' नांव सूं संपादन-प्रकाशन ई करयौ। आप 'मनवार' अर 'मरवण' नांव सूं राजस्थानी री दो कथा-पत्रिकावां रौ संपादन करयौ अर कीं बरस राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी री पत्रिका 'जागती जोत' रौ संपादन ई करयौ। अबार आप राजस्थानी लघुकथा री अनियतकालीन पत्रिका 'अपणायत' रौ संपादन करै। आपनैं कहाणी-संग्रै 'सातूं सुख' सारू राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर कानी सूं 'शिवचंद्र भरतिया राजस्थानी गद्य पुरस्कार' अर मारवाड़ी सम्मेलन मुंबई रौ 'राजस्थानी पुरस्कार' मिळ्यौ। इणां रै टाळ ई केई इनाम-इकराम आपनैं मिळ चुक्या है।

पाठ परिचै

इण पाठ में भंवरलाल 'भ्रमर' री दो लघुकथावां 'माटी री मनस्या' अर 'बांझ' सामल करीजी है। पैली लघुकथा में माटी री अभिलासा अर परोपकार री भावना दरसाईजी है। इणमें अेक कुंभार माटी नैं लाळच देवै कै थूं कैवै तौ थनैं गणेसजी, लिछमी कै सरस्वती री मूरत बणाय देवूं जिकौ लोग थनैं घणैमान पूजैला। पण माटी कैवै कै म्हनैं तौ थूं अेक दिवलै रै रूप में घड़ दै, जिणसूं म्हैं जगत में उजाळौ करण रौ निमित्त बण सकूं। इणी भांत दूजोड़ी लघुकथा 'बांझ' में अेक अैड़ी नारी-पात्र नैं साम्हीं लाईज्यौ है, जिण माथै बांझ होवण रौ आरोप लगाईजै अर पछै सासरिया उणनैं घर सूं काढ देवै। पण वा ई नारी जद दूजौ घर मांड लेवै तौ उणरै आंगणै बेटौ खेलै, पण पैलड़ौ धणी जकौ उणनैं घर सूं काढै, वौ दूजवर बण्या उपरांत ई अेक टाबर सारू तरसै। कैवण रौ मतलब औ कै खोट भलांई आदमी में होवौ, पण उणरी तूमत लुगाई माथै लगाईजै। भारतीय लोकमानस रै इण सोच नैं मिटावण में आ लघुकथा घणी सहायक सिद्ध होवै।

माटी री मनस्या

कुंभार माटी नै गीली करनै सागीड़ी गूंधी। गुंधीज्यां पछै माटी सूं पूछ्यौ, ''कांई बणावां, थनै?''

माटी अबोली रैयी।

कुंभार पाछौ पूछ्यौ, ''देवळी बणावां? कैवै तौ गणेस जी री मूरती बणाय देवूं? सगळां सूं पैली पूजीजसी, का पछै लिछमी बणाय देवूं? जिकी नै हरेक गृहस्थ नित पूजै-ध्यावै। लिछमी सगळां नैं नाच नचावै। थूं कैवै तौ सुरसत बणाय देवूं! जिकी कला, साहित्य, संगीत अर ग्यान री अधिष्ठात्री देवी है। सगळां री आदरजोग। अबार थकां बताय दै, बाकी थारी मरजी।

माटी खासी ताळ तांई अबोली रैयी, अमूझबौ करी। पछै टसकती होळै-सी'क बोली, ''म्हारी मानै जणै तौ

पाणी रा घड़ा-मटकियां बणायलै, जिकै सूं सगळां री तिस बुझाय सकूं अर गांव-नगर सगळी ठौड़ चावी बण सकूं। जनसेवा करनै आगोतर सुधार सकूं।

नीं तो फेर दिवलौ बणाय दै, जिकै सूं म्हैं अंधारौ भगायनै घर-घर उजाळौ कर सकूं।

बांझ

उण री कूख सूनी ही।

सात बरस होयग्या ब्यांव हुयां नै। तौ ई टाबर कोनी होयौ।

''बांझड़ी है, आ तौ'' कैयनै उणरै धणी उणनैं घर सूं काढ दी।

बापड़ी रै आगै-लारै कोई कोनी हौ। पीहर न सासरौ। जावै तौ कठै जावै? किणी सैंध-पिछाणवाळै री सरण लीनी। चौका-बासण करनै टैम पूरौ करै ही।

उणी दिनां अेक जणै री जोड़ायत जापै में मरगी। टाबर नै छोडगी लारै। धणी नैं लुगाई सूं बत्ती आपरै टाबरियै वास्तै अेक मां री घणी जरूत ही। उणरी निजर उण माथै पड़गी। नौरा काढ्या अर समझायी उणनैं। वा राजी-राजी उणरै घरै आयनै नातै बैठगी। दोनां रौ घर बसतौ होयग्यौ।

छव महीनां में ई कूख हरी होयगी उणरी। रामजी री दया सूं वा तीन टाबरां री मां है, आज। अेक पैलड़ी रौ है अर दो आपरा जायोड़ा।

उणरौ पैलड़ौ धणी ई दूजी परणीजग्यौ। दायजौ घणौ ई लायौ। रामजी री दया सूं वौ ई आपरी जोड़ायत सागै सौरौ-सुखी है। पण वौ अेक टाबरियै सारू तरसै हाल तांई!

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

उंका=उणरै। उफणतौ तावड़ौ=तीखी धूप। उइं=उणनैं। कठी=कठीनै, किन्नै। खीं=कांई। खेवै=कैवै। परकम्मा=फेरी, परिक्रमा। दमनी=धीमी। छोकी=चोखी, आछी। थे=आप। वांकी=उणरी। जामण=मां, मायड़, मांई। वां=बठै। साता सूं=सौराई सूं, सुख सूं। मंदर के आड़ी=मिंदर कानी। सभ्याईं=सगळां नैं। बायरां=लुगायां।

देवळी=मूरती। सुरसत=सरस्वती। सगळा=सैंग, सारा। ताळ=देर। अबोली=मून धार्‌योड़ी, चुप। होळै-सी'क=धीरै-सी। आगोतर=आगलौ जलम। उजाळौ=च्यानणौ। बांझड़ी=निपूती। जोड़ायत=लुगाई, पत्नी। जापै में=प्रसव री वेळा। नौरा=मनवार, गरजां। कूख हरी होयगी=गरभ ठैरग्यौ। दायजौ=दहेज।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'लहर लहर चंबल' किण लेखिका री पोथी है?

(अ) डॉ. लीला मोदी (ब) किरण राजपुरोहित 'नितिला'

(स) नीता कोठारी (द) मोनिका गौड़

( )

2. 'आज रौ सरवण' लघुकथा में रामरतन आपरी मां नैं टोकरा में कठै ले जावै ?

(अ) मिंदर दरसण करावण नै (ब) पंचकोसी परकम्मा दिरावण नै

(स) आपरै छोटै भाई रै घरै पूगावण नै (द) तीरथ करावण नै

( )

3. भंवरलाल 'भ्रमर' राजस्थानी में किसी पत्रिका निकाळी ?

(अ) गणपत (ब) मरवण

(स) लीलटांस (द) ओळख

( )

4. 'माटी री मनस्या' में माटी री कांई मनस्या है ?

(अ) घड़ा-मटकियां अर दीवौ बणण री (ब) देवी अर देवतावां री मूरत बणण री

(स) गल्लौ अर गमलौ बणण री (द) हटड़ी अर ढकणी बणण री

( )

5. 'बांझ' कहाणी रौ नायक किण सारू तरसै ?

(अ) रोटी सारू (ब) पाणी सारू

(स) गाय सारू (द) टाबर सारू

( )

साव छोटा पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. 'आज रौ सरवण' लघुकथा किण लेखिका री है ?
2. रामरतन रौ काळजौ किण सूं भी तेज धड़क रैयौ हो ?
3. 'माटी री मनस्या' लघुकथा रा लेखक कुण है ?
4. माटी नैं दिवलौ बणण रौ चाव क्यूं है ?
5. 'बांझ' लघुकथा मांय धणी आपरी लुगाई नैं घर सूं क्यूं काढै ?

छोटा पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. डॉ. लीला मोदी री च्यार पोथ्यां रा नांव लिखौ।
2. सागवाळौ रामरतन नैं देखनै कांई कैयौ ?
3. कुंभार माटी सूं कांई पूछै ?
4. 'बांझ' लघुकथा री मूळ संवेदना कांई है ?

लेखरूप पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. 'आज रौ सरवण' लघुकथा री मूळ संवेदना दाखला देयनै लिखौ।
2. टोकरा नैं देखनै मिनख-लुगायां रामरतन रै बारै में कांई बातां करी ?
3. माटी अर कुंभार रै बिचाळै कांई संवाद होवै ? विस्तार सूं लिखौ।
4. 'बांझ' लघुकथा लोकमानस रै किण सोच नैं मिटावण में सहायक सिद्ध होवै ?